आभारज्ञापन

मानव समाज परस्परावलंबन पर आधारित है। मनुष्य के जीवन में कई कार्य ऐसे होते हैं, जिन्हें पूर्ण करने हेतु उसे अन्य किसी की सहाय तथा सहयोग की आवश्यकता रहती है। मेरा यह शोध-कार्य भी इनमें से एक है, जिसे संपन्न करने में कई लोगों का सहयोग मुझे प्राप्त हुआ। इनका हृदयपूर्वक आभार प्रदर्शित करना चाहूँगी।

शोध-कार्य में शोध-निर्देशक की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहती है। अपने शोध-निर्देशक प्रोफ़ेसर डॉ. राकेश महिसुरी सर का सतत मार्गदर्शन एवं सहयोग मुझे मिलता रहा है। उनकी मैं हृदय से आभारी हूँ।

फॅकल्टी डीन प्रोफ़ेसर डॉ. प्रभाकर दाभाडे सर तथा समस्त फॅकल्टी परिवार के सहयोग के लिए मैं उनके प्रति आभार प्रदर्शित करती हूँ।

इस शोध-कार्य में बड़ौदा के वरिष्ठ शिल्पकार तथा फॅकल्टी ऑफ़ फ़ाईन आर्टस के भूतपूर्व डीन प्रोफ़ेसर डॉ. दीपक कनल सर का भी मार्गदर्शन मुझे प्राप्त हुआ। अपने सौन्दर्यशास्त्र एवं रस विषय संबंधी ज्ञान से लाभान्वित करने के लिए मैं उनकी सदैव आभारी रहूँगी।

कुछ व्यक्तिओं का प्रदान एवं स्थान ऐसा होता है, जिनके प्रति आभार प्रदर्शित करना कभी पर्याप्त या संभव नहीं हो सकता। उनका योगदान केवल इस शोध-कार्य में सीमित न होते हुए मेरे समग्र व्यक्तित्त्व में, अस्तित्त्व में सदैव रहा है। इनमें मैं अपने गुरुजन, परिवारजन तथा कुछ करीबी मित्रों को समाविष्ट मानती हूँ। इनके सहयोग के बिना यह शोध-कार्य संपन्न होना नामुमकिन था। सतत मार्गदर्शन, प्रोत्साहन, अनुकूलन तथा तत्पर सहाय के लिए मैं इनका सादर ऋण-स्वीकार करती हूँ, इनकी सदैव ऋणी रहूँगी।

इस कार्य में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहायरूप होने वाले सभी लोगों का मैं हृदयपूर्वक आभार प्रकट करती हूँ।